हिन्दी अकादमी, हैदराबाद ISSN 2277-9264

# संकल्य

48 वर्षों से
निरंतर दक्षिण से
प्रकाशित

जुलाई-सितंबर 2020

# हार्दिक बधाई

**प्रो. निर्मला एस. मौर्या** को वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश के प्रथम महिला कुलपति एवं **प्रो. टी.वी. कट्टीमनी** को केन्द्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, आन्ध्र प्रदेश के प्रथम कुलपति नियुक्त किए जाने पर हिन्दी अकादमी, हैदराबाद तथा 'संकल्य' परिवार की ओर से हार्दिक-हार्दिक बधाई।

मध्य प्रदेश सरकार द्वारा साहित्य अकादमी, भोपाल के **निदेशक** के पद पर **डॉ. विकास दवे** जी को मनोनित किए जाने पर हिन्दी अकादमी, हैदराबाद एवं 'संकल्य' परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद के दौरे पर पधारे **उपनिदेशक डॉ. राकेश कुमार शर्मा** द्वारा 'संकल्य' के संपादक **डॉ. गोरख नाथ तिवारी** को निदेशालय का स्मृति चिह्न प्रदान किए जाने का दृश्य।

दौरे पर पधारी गुजरात राज्य स्तरीय अनुदान समिति की सदस्या **डॉ. वर्षा सोलंकी** ने अपनी काव्य कृति **'अंतर्मन'** की प्रति उपनिदेशक **डॉ. राकेश कुमार शर्मा** की उपस्थिति में 'संकल्य' के संपादक **डॉ. गोरख नाथ तिवारी** को भेंट की।

ISSN 2277-9264

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय,
भारत सरकार के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित
मधुसूदन चतुर्वेदी, प्रो.बैजनाथ चतुर्वेदी, प्रो.वसंत चक्रवर्ती कीर्ति स्तंभ

Estd. 1956

# संकल्य

## त्रैमासिक

वर्ष : 48 : * अंक : 3 * जुलाई-सितंबर, 2020 ई.

प्रेरणास्रोत
**विवेकी राय**

प्रधान संपादक
**प्रो.टी.मोहन सिंह**
**अध्यक्ष : हिंदी अकादमी, हैदराबाद**

परामर्शदाता मंडल
**प्रो.दिलीप सिंह**
**प्रो.तेजस्वी कट्टीमनी**
**डॉ.अहिल्या मिश्र**

संपादक
**प्रो.शुभदा वांजपे**
**डॉ.गोरखनाथ तिवारी**

कानूनी सलाहकार
**सुश्री कविता ठाकुर**
एम.ए., एल.एल.एम.

प्रकाशक
**डॉ.गोरखनाथ तिवारी**
**सचिव : हिंदी अकादमी, हैदराबाद**

**संपादकीय कार्यालय**
प्लॉट नं.10, रोड नं.6, समतापुरी कॉलोनी
न्यू नागोल के पास, हैदराबाद-500 035 (तेलंगाना)
फोन : 040-24054306

**संकल्प** (त्रैमासिक)

- प्रकाशित सामग्री की रीति-नीति या विचारों से **हिंदी अकादमी, हैदराबाद** या संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है।
- **'संकल्प'** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल हैदराबाद न्यायालय के अधीन होंगे।

**शुल्क भेजने का पता :**
मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट **हिंदी अकादमी हैदराबाद** के नाम...
**सचिव : डॉ.गोरखनाथ तिवारी**
फ्लैट नं.258/ए, ब्लॉक नं.11, तीसरी मंजिल,
जनप्रिया टाउनशिप, मल्लापुर,
हैदराबाद-500 076 (तेलंगाना), ई-मेल-**hindiakadami@gmail.com**
फोन : 09441017160

**मूल्य :**
**वार्षिक :** रु.350/-, **आजीवन :** रु.4,000/- (व्यक्तिगत), संस्थागत रु.5,000/-
संस्थाओं के लिए : **वार्षिक** : रु.800/-, **संरक्षक सदस्यता शुल्क :** रु.5,100/-

**आवरण**
**नरेंद्र राय 'नरेन'**
चित्रकार एवं कवि

**शब्द संयोजन :**
**जी.श्रीराम मूर्ति डॉटा प्रासेसर्स**
प्लॉट नं.199, एस.वी.ए.कॉलोनी,
वनस्थलिपुरम, हैदराबाद-500 070
फोन : 092476 32717

**मुद्रक :**
**कर्षक आर्ट प्रिंटर्स**
40-ए.पी.एच.बी.
विद्यानगर, हैदराबाद-500 044
फोन:040-27618261, 27653348

ISSN 2277-9264 RNI No. 25388/74

संकल्प त्रैमासिक

वर्ष : 48 ⋆ अंक : 3 ⋆ • जुलाई-सितंबर, 2020

# अनुक्रम Contents

## संपादकीय

5 **प्रो.टी.मोहन सिंह**/संपादक की कलम से

## आलेख

8 **रमेश कुमार बंग**/अपने ही देश में विस्थापित हिंदी

11 **प्रो.निर्मला एस.मौर्य**/कोविड-19 का साहित्य और समाज पर दूरगामी प्रभाव

20 **प्रो.कृष्ण कुमार गोस्वामी**/पं.दीनदयाल उपाध्याय का भाषा चिंतन

26 **प्रो.आर.एस.सर्राजु**/तेलंगाना राज्य में हिंदी भाषा : स्वीकृति, विस्तार, शिक्षण और अनुवाद

34 **डॉ.अखिलेश निगम 'अखिल'**/किन्नर समस्या पर आधारित कहानी : मेरा हक

42 **प्रो.रसाल सिंह**/बहुत नहीं सिर्फ चार कौए थे काले: आपात काल!

49 **डॉ.जयंत कर शर्मा**/पत्रकार-संपादक गांधी

66 **डॉ.विद्यारानी**/तुलसी साहित्य की प्रासंगिकता

70 **डॉ.उर्मिला सिंह तोमर**/वर्तमान परिवेश मे जीवन मूल्यों की आवश्यकता: एक विवेचन

73 **डॉ.अजय कुमार**/भीष्म साहनी कृत नीलू-नीलिमा-नीलोफर में धार्मिक कट्टरता: एक अनुशीलन

78 **डॉ.प्रियदर्शिनी**/कृषक जीवन व प्रेमचंद: कुछ विचार

85 **डॉ.एपसिलिन एम.एस.**/कबीर साहित्य में अभिव्यक्त सांप्रदायिक सद्भाव

88 **लोङ्जम रोमी देवी**/नई कहानी : विविध संदर्भ

100 **उषा एम.एस.**/कुईयाँ जान में चित्रित जल समस्याएँ

103 **डॉ.विजयीबाई के.बी.**/वीरेंद्र जैन के उपन्यासों में चित्रित यथार्थ

## लघु कथा


106 **पवित्रा अग्रवाल** की तीन लघु कथाएँ

109 **राकेश शर्मा** की दो लघु कथाएँ


## कहानी


112 **विवेक द्विवेदी**/चट्टान

123 **ओम धीरज**/खुशी के आँसू


## कविता


130 **राजेश्वर तिवारी**/समुद्र, प्रकृति

131 **विश्वजीत 'सपन'**/लावणी छंद पर आधारित 'गीत'

132 **राधेश्याम तिवारी**/कवि से डरता है ड्रैगन

133 **कैलाश भट्टड़**/कोरोना से डरोना

134 **संतोष कुमार झा** की दो कविताएँ-गिरवी, कैसी हो स्वतंत्रता

135 **अजय कुमार पांडेय** की दो कविताएँ

136 **राममिलन प्रसाद**/जीवन के गीत बनूँ न बनूँ

137 **डॉ.गजाधर शर्मा 'गंगेश'**/गजल

138 **डॉ.गुणमाला सोमाणी**/आजादी

139 **डॉ.दीपेंद्र शर्मा** की दो कविताएँ

141 **राजकुमार जैन 'राजन'**/समाधान

141 **डॉ.राजीव कुमार सिंह** की दो कविताएँ

143 **श्रीमती ज्योति नारायण**/इतिहास मुक्ति

144 **भावना मयूर पुरोहित**/बासमती

145 **डॉ.रमा द्विवेदी**/विविध रंग के दोहे

146 **डॉ.विजयानंद**/भारत का मान रखो वीरों

148 **डॉ.कंचन सेठ**/प्रकृति का प्रकोप

149 **सूर्य प्रकाश शर्मा 'सूर्य'**/वरदान दो माँ

150 **पीयूष कुमार श्रीवास्तव**/चाइना को आईना

ISSN 2277-9264

**संपादकीय**

# हिंदी दिवस : प्रासंगिकता और महत्व

हिंदी आज भारत की ही नहीं विश्व की लोकप्रिय भाषा है। हिंदी को भारत की लोकप्रिय भाषा बनाने का कार्य आर्य समाज के दयानंद सरस्वती एवं महात्मा गांधी जी ने किया है। इन दोनों ने देशों के उत्थान एवं हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए अपने आपको समर्पित किया है। वे दोनों हिंदी के हिमायती थे। वे मानते थे कि राष्ट्र भाषा के बिना राष्ट्र गूंगा होता है। गांधीजी ने कहा था कि हिंदी को हम राष्ट्रभाषा मानते हैं। वह राष्ट्रीय होने के लायक है। वही भाषा राष्ट्रीय बन सकती है जिसे देश के अधिसंख्यक लोग जानते और बोलते हैं।

सन् 1910 में महात्मा गांधी ने कहा था कि हिंदुस्तान को सचमुच एक राष्ट्र बनाना है तो चाहे कोई माने न माने राष्ट्रभाषा हिंदी ही बन सकती है। हिंदी भाषा उस समुद्र जलराशि की तरह है जिसमें अनेक नदियाँ मिली हों। हिंदी से यदि देश की अन्य भाषाओं को रंचमात्र की क्षति होती तो गुजराती भाषा भाषी दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधी, अन्य अहिंदी भाषी नेताजी सुभाषचंद्र बोस, तमिल के यशस्वी लेखक और देश के सुविख्यात नेता श्री सी.वी.राजगोपालाचारी अपने राज्य में हिंदी विरोधी आंदोलन के होते हुए भी हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए अनवरत चेष्टा नहीं करते।

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को जीवित रखने के लिए उसकी अखंड राष्ट्रीय भावना को प्रचारित-प्रसारित एवं परिपुष्ट करने हेतु हिंदी को बचाना होगा।

सन् 1917 में पूज्य राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि-किसी देश की राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती है जिसे वहाँ की अधिकांश जनता बोलती हो। वह सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में माध्यम भाषा बनने की शक्ति रखती हो। सरकारी कर्मचारियों एवं सरकारी कामकाज के लिए सुगम और सरल हो, जिसे सुगमता से और सरलता से सीखा जा सकता है। जो संपूर्ण